

## विचार बिन्दु

परिश्रम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। -हितोपदेश

## क्या हम जलवायु परिवर्तन के कारण प्रलय के चौराहे पर खड़े हैं?

अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि जिसे संसार के लगभग सभी देश, जो संख्या में 198 हैं, उसका निष्पादन 2015 में हुआ था, उसे पेरिस क्लाइमेट चेन्ज एग्रीमेंट के नाम से सम्बोधित किया जाता है, उसका मूल उद्देश्य है सभी हस्ताक्षरकर्ता देश प्रयत्न करेंगे कि धरती का तापमान 2 डिग्री से. की सीमा से अधिक नहीं होगा तथा यों सभी देश अपनी-अपनी घोषणा के अनुसार उचित कदम उठाकर भरसक प्रयत्न करेंगे कि तापमान 1.5 डिग्री से. इण्डस्ट्रीयल लेवल से अधिक नहीं बढ़ने देंगे। वस्तुतः पेरिस एग्रीमेंट क्योटो प्रोटोकॉल 1997 का ही एक अभिन्न अंग है। अब तक जो भी अन्तर्राष्ट्रीय एग्रीमेंट हुए हैं, सभी का यही उद्देश्य रहा है कि यदि धरती माँ को बचना है तो ग्रीन हाउस गैसों के कन्सेन्ट्रेशन उस सीमा तक नहीं पहुँचने दें, जिससे सतत विकास के लक्ष्य जो हमने निर्धारित किये हैं उन्हें क्रियाशील बना सकें और धरती को मनुष्यों ने जो नर्क बनाया है, उसे रहने योग्य बनाये रखें। विकासित देशों की प्रतिबद्धता के अनुसार विभिन्न स्रोतों से प्रतिवर्ष 100 मिलियन डॉलर जमा करने की योजना को क्रियाशील बनायें।

कॉप-28 का सम्मेलन 30 नवम्बर से 12 दिसम्बर 2023 तक Expcocity Dubai United Arab Emirates में होने जा रहा है। जहाँ पुनः चर्चा होगी कि पेरिस एग्रीमेंट की पालना अभी तक क्यों नहीं हो पा रही है?

पेरिस एग्रीमेंट का अर्थ है देशों की कटिबद्धता कि वे तापमान को 1.5 डिग्री से. से अधिक नहीं बढ़ने देंगे और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत धरातल देंगे। Decarbonization पर तथा Carbon Pricing पर विशेष ध्यान देंगे। खेलों को देखें तो जात होगा कि सफलता दूसरे हॉफ में ही मिलती है। समय अभी है। आधा हॉफ शेष है।

हमें Sustainable Development Goals (SDG) (सतत विकास के लक्ष्यों) को प्राप्त करना होगा। 2015 में मेम्बर सदस्यों ने जो लक्ष्य रखा था उसे पूरा करेंगे किन्तु हम 15 प्रतिशत टारगेट भी पूरा नहीं कर सके हैं। शेष समय ही में हमें SDG लक्ष्य तक पहुँचना ही है। हम कर सकते हैं। हमें करना है। वस्तुतः 2023 का वर्ष लक्ष्य निर्धारित किये जाने व सन् 2030 के अन्तिम वर्ष के मध्य का भाग है। आधे बचे हुये समय में हमारे देश के लीडर्स, पोलिसी मेकर्स, सिविल सोसाइटी व समाज यह मानता है कि सतत विकास के लक्ष्य का आधा भी पूरा नहीं हुआ है, किन्तु उनका विश्वास है कि इसे पूरा करना है। यूएन के सदस्य राज्यों ने सतत विकास के लक्ष्यों को पूरा करने की घोषणा की थी; किन्तु 15 प्रतिशत तक भी पूरा नहीं हो पाया। तीन सदियों पूरी होने तक भी लिंग भेद समाप्त नहीं होगा, फलस्वरूप 2030, 575 मिलियन लोग अत्यन्त गरीबी का जीवन जीते रहेंगे।

पेरिस एग्रीमेंट को सफलता मिल सके सभी देश इस ओर प्रयत्नशील हैं। 8 अक्टूबर 2023 का UNFCCC ने मिडिल ईस्ट व नोर्थ अफ्रीका (MENA) ने रियाध में क्लाइमेट वोक मनाया था आशा थी नया सवेरा होगा, किन्तु यह जानकारी स्पष्ट हो सकी कि वहाँ 60 प्रतिशत आबादी को पीने का पानी उपलब्ध नहीं है और जोडीपी का 70 प्रतिशत वाटर स्ट्रेस पर खर्च होता है ताकि वहाँ विकास का कार्य हो सके।

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) सच्ची घटना है क्योंकि संसार में विनाश लीला किसी न किसी रूप में दिखाई दे रही है। उत्तराखण्ड में 2013 में जल प्रलय हुआ और 2023 में वर्षा गर्मी के मौसम में उत्तराखण्ड व हिमालय क्षेत्र कुल्लू घाटी, शिमला आदि के क्षेत्रों में बादल फटने की घटनायें हुईं। बस्तियाँ बह गईं, सड़कें टूट गईं, मवेशी, पुल व वाहन बह गये ये घटनायें प्रलय से कम नहीं थीं। शहरों में पानी घुस गया विपत्तियाँ विकराल रूप में कहर बन कर आईं। यह वर्ष विपदाओं से भरा रहा, कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा था। प्रलय आने वाला है, या आ चुका है, इसे देश ने देखा है। अमेरिका में 50 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान हो गया। यूरोप में लोग नदियों के किनारे धागे लगे। बर्बादी का जो रूप विश्व भर में देखा वह प्रलय ही का रूप था। अमेरिका द्वारा प्रकाशित नेशनल क्लाइमेट असेसमेन्ट रिपोर्ट जारी की थी, उसमें कहा था यदि गर्मी इसी प्रकार बढ़ती गई तो सन् 2100 तक धरती का तापमान 4.5 डिग्री से. बढ़ जावेगा। परिणाम स्वरूप पहाड़ पिघल जावेंगे। ध्रुव की बर्फ से समुद्र की सतह 21 फीट तक बढ़ जावेगी। पानी व खाना विष बन जावेंगे। अनाज की

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) सच्ची घटना है क्योंकि संसार में विनाश लीला किसी न किसी रूप में दिखाई दे रही है। उत्तराखण्ड में 2013 में जल प्रलय हुआ और 2023 में वर्षा गर्मी के मौसम में उत्तराखण्ड व हिमालय क्षेत्र कुल्लू घाटी, शिमला आदि के क्षेत्रों में बादल फटने की घटनायें हुईं। बस्तियाँ बह गईं, सड़कें टूट गईं, मवेशी, पुल व वाहन बह गये ये घटनायें प्रलय से कम नहीं थीं। शहरों में पानी घुस गया विपत्तियाँ विकराल रूप में कहर बन कर आईं।

पौष्टिकता समाप्त हो जावेगी। कोरोना से भयंकर महामारी फैलेगी। जल प्लावन होगा।

मानव के अधिकारों को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मजबूत धरातल दिया है और देश की सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट रूप से माना है कि जीने के अधिकार का अर्थ केवल जिन्दा रहना नहीं है अपितु गरिमा मय जीवन से जीना है। जीने के अधिकार में प्रदूषण मुक्त पर्यावरण और शुद्ध पीने का पानी व पौष्टिक खाने को ऊँचा स्थान दिया है।

हमारी संस्कृति का मूल मंत्र है, "सर्वे भवन्तु सखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्" अर्थात् सभी सुखी हों, सभी लोग मुक्त रहें सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बना पायें।

सभी देश विकास की ओर कदम बढ़ावें। संयुक्त राष्ट्र संघ ने सतत विकास पर 'रियो' (2012 का परिणाम दस्तावेज बनाया जो हमारी भविष्य की कल्पना को साकार करेगा। सतत विकास के 17 लक्ष्य व 169 निर्देश निर्धारित किये गये हैं। मानव को गरिमा मय जीने के लिये सतत विकास की ओर बढ़ना होगा। मानव वादी संस्कृति से आगे बढ़कर धरती माँ के अधिकारों पर भी अपनी सोच को विस्तार दिया है। नदियों को भी हमने प्राणी माना है और विवेकहीन धरती के दोहन को पाप माना है। धरती पर रहने वालों को कुटुम्ब माना है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण और CO<sub>2</sub> (कार्बनडाईऑक्साइड) के बढ़ने के कारण धरती, मानव व प्राणियों के रहने योग्य नहीं रहेगी। अजीब-2 घटनायें हमें देखने को मिलेंगी। रेगिस्तान में स्नो (बर्फ) गिरेगी और जंगल स्वयं जलेंगे।

हिन्दू जो शाकाहारी है, उनमें कुछ मांसाहारी हो रहे हैं और विदेशों में मांसाहारी, शाकाहारी हो रहे हैं, शाकाहारी बनो और धरती माँ को बचाओ। यह नारा विदेश दे रहे हैं।

पेरिस एग्रीमेंट पर अमल करना प्रत्येक हस्ताक्षरकर्ता देशों का धर्म है। यही एक मात्र तरीका है जिससे हम पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग से बचा सकते हैं। अपनी-2 घोषणाओं के लिये देश ने जो उत्तरदायित्व निभाने की प्रतीज्ञा की है, उसके अनुसार आचरण करना है। यह तो सत्य है कि बड़े-2 उद्योगपतियों ने कोयले व फोसिल फ्यूल से यानी पेट्रोलियम प्रोडक्ट से बिजली बनाई है और कार्बनडाईऑक्साइड आदि गैसों को दूषित कर रहे हैं। इन पर निर्भरता को समाप्त करना है। बिजली बनाने के कई तरीके हैं। बिजली कोयले, पेट्रोलियम प्रोडक्ट से पानी से सूर्य की किरणों से, हवा से, यूरेनियम से (Atomic Energy) बनाई जाती है। हवाईजहाज व कार, ट्रक आदि पेट्रोल अथवा डीजल से चलाये जाते हैं। सोलर एनर्जी सबसे अच्छा विकल्प है। भारत ने अपनी घोषणा के अनुसार CO<sub>2</sub> पर एक सीमा तक Solar Energy आदि से कार्बन एमिशन में कमी लाने का प्रयोग भारत कर रहा है। सूर्य की ऊर्जा ही हमारी ग्रीन ऊर्जा है। सोलर ऊर्जा टेक्नोलोजी को देश के वैज्ञानिक विकसित कर रहे हैं।

प्रत्येक फैक्ट्री, औद्योगिक इकाईयाँ, शिक्षण संस्थान, विश्वविद्यालय आदि को कानून के तहत अनुमति इस शर्त पर देवें कि वे अपनी बिजली की आवश्यकता के अनुसार स्वयं उत्पादन करेंगे। साथ ही पास के गाँवों को भी बिजली देंगे।

पेरिस एग्रीमेंट, क्योटो एग्रीमेंट की भांति बाध्यकारी नहीं है। आर्बिट्रेशन का क्लज भी नहीं के बराबर था; क्योंकि आर्बिट्रेशन जब ही नियुक्त होगा जब विरुद्ध पक्ष अपनी सहमति दें। पेरिस एग्रीमेंट का आधार है, मानव अधिकार और मानव अधिकार कोर्ट में प्रवर्तनीय है, अतः कोर्ट में अपने अधिकारों के लिये जाया जा सकता है। यों सबसे अच्छा तो यह हो कि International Court of Justice cesb Human Right के इस मामले को ले जाया जा सकता है अथवा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण ट्रिब्यूनल की स्थापना की जावे।

ग्लोबल तापमान 1.5 डिग्री से. से अधिक बढ़ चुका है प्रलय का नमूना तो हम गत 3 महिनों में देख चुके हैं। यदि पेरिस एग्रीमेंट की पालना नहीं की तो महा प्रलय को कोई रोक नहीं पायेगा। "शाकाहारी बनो और धरती माँ को बचाओ"।

-अतिथि सम्पादक,

पानाचन्द्र जैन

पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

# अवसाद की जड़ें आपकी आंतों में हो सकती हैं



डॉ. रामावतार शर्मा

सदियों पहले क्रांतिकारी जनकवि कबीर ने एक दोहा लिखा था जो अद्वितीय और कालव्ययी है:

कबीरा वैद बुलाइयो, पकर के देखे बांह

वैद ना वेदन जानिए, करक कलेजे मांह।

यह दोहा आध्यात्मिक होने के साथ व्यावहारिक भी है और यहाँ तक कि चिकित्सा विज्ञान के लिए भी एक संदेश है। एक चिकित्सक जब किसी रोगी का उपचार करता है तो कुछ प्रतिशत रोगियों को छोड़ कर अधिकतर मामलों में निश्चिन्ता की बजाय अंदाज से इलाज अधिक होता है। इस कथन को शल्य चिकित्सा से नहीं जोड़ना चाहिए क्योंकि वहाँ पर सर्जन जानता है कि उसे क्या करना है। इसीलिए चिकित्सा व्यवसाय को मेडिकल प्रैक्टिस (चिकित्सकीय अभ्यास) कहा जाता है। रोगियों को कितनी ही प्रकार की ऐसी दवाएँ दी जाती जो उन्हें स्वस्थ करने की बजाय मृत्यु के मुँह में धुँधल करती हैं। ऐसी एलोपैथी,

आयुर्वेद और अन्य सब चिकित्सा पद्धतियों में होता है इसीलिए कहावत बनी है कि 'नीम हकीम खरे गोले जीव' जिसका मतलब है कि अनाड़ी चिकित्सक आप की मृत्यु का कारण बन सकता है। अवसाद (डिप्रेशन) और अशांति (एक्साइट) मनुष्य जीवन की सर्वाधिक घटने वाली स्थितियाँ हैं।

विश्व में करोड़ों लोग हर समय इन मानसिक स्थितियों से जूझ रहे होते हैं और असंख्य लोग रोजाना अवसाद या मानसिक अशांति को नियंत्रित करने की दवाओं का सेवन कर रहे होते हैं। माना कि ये दवाएँ राहत देती हैं और जैसे-तैसे जीवन की गाड़ी को गतिमान रखने में सहायक होती हैं परंतु इनसे सामान्य स्थिति स्थापित नहीं होती है। जीवन पर्यंत दवा का सेवन नुकसानदेह होता है, विचारों के नवनिर्माण को रोकता है, व्यक्ति दवाओं पर आश्रित होकर आत्मविश्वास खो देता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दवाएँ मस्तिष्क पर कार्य करती हैं जबकि रोग पैट की आंतों में पनप रहा होता है। कबीर के वैद्य की तरह कलेजे की करक को चिकित्सक बांह में दूँध रहा होता है!

नेचर कम्युनिक्शन नामक वैज्ञानिक पत्रिका में हाल ही में एक दीर्घकालीन अध्ययन का शोधपत्र प्रकाशित हुआ है। ब्रिटेन एवम नीदरलैंड के शोधकर्ताओं ने संयुक्त सहयोग से अपने अपने देशों में लंबे समय के अनुसंधान से पाया है कि मनुष्य की

आंतों में 13 तरह के बैक्टीरिया होते हैं जो अवसाद की उत्पत्ति में सहायक होते हैं। अध्ययन के अनुसार सूक्ष्मदर्शी जीव विभिन्न नस्लों में अपने विशिष्ट प्रभाव द्वारा आंतों में ऐसे रसायन पैदा करते हैं जिन्हें अवसाद और मानसिक अशांति पैदा हो सकते हैं या फिर इनसे पूर्ण मुक्ति भी मिल सकती है। ऐसा इन बैक्टीरिया द्वारा न्यूरो ट्रांसमीटर पदार्थों जैसे सेरोटोनिन और ग्लूटामेट आदि का निर्माण करने से होता है।

अवसाद एक ऐसी मनःस्थिति है जिसमें व्यक्ति उदास, अकेला और दुःखी-सा रहने लगता है। वह जीवन की खुशियों के प्रति उदासीन हो जाता है और जीवन में खालीपन महसूस करने लगता है। अवसादग्रस्त होने के कई कारण हो सकते हैं। आनुवंशिक पूर्ववृत्ति (जेनेटिक प्रेडिस्पोजिशन), आर्थिक एवम सामाजिक स्थिति, पर्यावरण एवम मौसम, मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ और शरीर में न्यूरो ट्रांसमीटर पदार्थों के स्तर में गड़बड़ी आदि अनेकों कारण हैं जो किसी व्यक्ति को अवसाद के दुष्चक्र में फसा सकते हैं। अवसाद एक ऐसा रोग है जो कि चिकित्सकों द्वारा वास्तविकता से अधिक भी डायग्नोस किया जाता है और कम भी निदानित होता है। यह विरोधाभास इसलिए है क्योंकि इस रोग का किसी रक्त या अन्य जांच द्वारा प्रमाण नहीं मिलता है। यह रोग मुख्यतया चिकित्सक के व्यक्तिगत निर्णय पर निर्भर करता है परंतु कितने

ही चिकित्सक स्वयं भी अवसादग्रस्त होते हैं इसलिए यह रोग कहीं ज्यादा तो कहीं कम मात्रा में निदान किया जाता है, जिसके फलस्वरूप काफी लोग बेवजह दवाएँ उपयोग में ले रहे हैं और कहीं पर जरूरतमंद लोगों को दवाएँ प्रदान ही नहीं करवाई जा रही हैं।

ऐसे में यह नया अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है जिसमें लोगों को संतुलित आहार इस सिद्धांत पर लेना होता है कि 'जैसा खाओगे उन्ना, वैसा ही रहेगा मना' हमारे शरीर में ग्लूटामेट जैसे न्यूरो ट्रांसमीटर होते हैं जो अवसाद, बेचैनी और घबराहट जैसी स्थितियों से संबंधित होते हैं। ये रसायन हमारी आंतों में स्थित माइक्रोबायोटिक बैक्टीरिया बनाते हैं। अध्ययन में पाया गया है कि जिन लोगों में अवसाद जैसी मानसिकता ज्यादा होती है उनका आंतों में कुछ विशेष प्रकार के बैक्टीरिया की कमी होती है। माइक्रोबायोटिक में नुनू, सेरोटोनिन और नोरएपीनफ्रीन जैसे रसायन बनाए जाते हैं जो हमें प्रसन्न तथा उत्साहित रखते हैं। अब यदि हमारी आंतों में अच्छे समूह के बैक्टीरिया होंगे जैसा प्रोबायोटिक्स में पाए जाते हैं तो हम प्रसन्न, जोशीले, रोमांटिक एवम स्नेहिल रहेंगे। इसके विपरीत यदि अच्छे समूह के बैक्टीरिया कम हो जाएँ और नुकसानदेह बैक्टीरिया आंतों के माइक्रोबायोटिक पर कब्जा कर लें तो हम अवसादग्रस्त हो जाते हैं जिसमें गुस्सा, उदासी, निराशा, हिंसा आदि हमारे

जीवन का हिस्सा बन जाते हैं और हमारा व्यक्तिगत बिखर जाता है। अध्ययन से पता चला है कि माइक्रोबायोटिक में बैक्टीरिया का उत्पाद होता है जो गाबा नामक रसायन को परिवर्तित कर ग्लूटामेट को नियंत्रित करता है। ग्लूटामेट की अत्यधिक सक्रियता अवसाद और बेचैनी पैदा करती है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि अवसाद की दवाएँ किसी भी व्यक्ति को पूर्ण रूप से ठीक नहीं कर सकती हैं। जीवन भर दवाओं का सेवन व्यक्ति को जीवी बना देता है, नीरस व्यक्ति अकेला पड़ जाता है। इन सब स्थितियों को देखते हुए हमें अवसाद के उपचार के तरीकों पर पुनर्विचार करना चाहिए यहाँ लगता है भोजन का संतुलित मात्रा में उपयोग करना सबसे कारगर औषधि हो सकती है। साइकोट्रोपिक दवाओं की जगह साइको प्रोबायोटिक का उपयोग लगता है एक उभरता हुआ नया उपचार होगा। मनुष्य जाति की एक विडम्बना रही है कि वह स्वस्थ एवम लंबे जीवन के लिए आसमान की किसी अदृश्य शक्ति के सामने हाथ फैलाती रही है जबकि समस्त जीवन प्रकट रूप में पृथ्वी से आता है। पृथ्वी का विनाश कर हम आकाश के ईश्वर से जीवन की उम्मीद बांधे अवसादग्रस्त जीवन से शापित रहेंगे यदि धरती की कोख से उपजे अन्न से अनभिन्न बने रहें।

-डॉ. रामावतार शर्मा, (चिकित्सक एवं लेखक)

## प्राचीन चारभुजानाथ मंदिर का हिस्सा गिरा, बड़ा हादसा टला

वॉर्ड के लोगों ने जर्जर हिस्सा गिराने के लिए लिखा पत्र

सांभर झील, (निर्स)। सांभर में अतिप्राचीन चारभुजा नाथ मंदिर विगत कई सालों से जीर्णोद्धार को तरस रहा था लेकिन मरम्मत और रखरखाव के अभाव में लगातार यह मंदिर जर्जर होता चला गया। देखरेख के अभाव की वजह से आखिरकार गुरुवार की दोपहर उसके आगे का हिस्सा दो चरणों में धराशायी हो गया। गनीमत यह रही की उस वक्त गली मोहल्ले के लोगों की आवाजाही नहीं थी अन्यथा कोई बड़ा हादसा हो सकता था।

वर्तमान में मंदिर के स्तंभ और दीवारें पूरी तरह से फटकर दो फाड़ हो चुकी हैं। छत पूरी तरह से झुक गई है और पीछे का हिस्सा भी गिरने जैसी स्थिति में कभी भी आ सकता है। बताया जा रहा है कि यह मंदिर माहेश्वरी पंचायत समाज का है यहां के पुजारी

राजेंद्र प्रसाद व्यास व वार्ड वार्डियों ने समाज को भी इसकी सूचना पहले भी दी थी और आज गिरने के दौरान भी उनसे इस संबंध में टीक करवाने का अनुरोध भी किया गया है। सूचना पाकर पार्षद पति टीकमचंद कुमावत भी मौके पर पहुंचे और नगर पालिका कार्मिकों को इसकी सूचना दी। वार्ड के लोगों ने अध्यक्ष से मुलाकात की और उन्हें लिखकर दिया कि पालिका अपने स्तर से जान माल की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आगे के हिस्से को गिराने के लिए तुरंत कार्रवाई करें। इस मामले में अधिशाषी अधिकारी कंचन राठौड़ ने एक आदेश जारी कर तीन कर्मचारियों को मंदिर स्थल के पास ड्यूटी पर तैनात किया है। इसकी सूचना उपखंड अधिकारी व वार्ड पार्षद ज्योति कुमावत को भी दी गई है।



सांभर में चारभुजानाथ मंदिर के आगे का हिस्सा गिर गया।

## वन विभाग ने चंदन की लकड़ी पकड़ी, एक गिरफ्तार

चंदन की लकड़ी को तस्करी कार्गो ट्रक में भरकर लेकर जा रहे थे

भीलवाड़ा, (निर्स)। वन विभाग ने कार्रवाई करते हुए सप्लाई हो रही चंदन की लकड़ी को पकड़ा है। इस चंदन की लकड़ी को तस्करी एक कार्गो ट्रक में लेकर जा रहे थे। क्षेत्र

■ ट्रक की जांच करने पर उसमें रखे पांच बोरों में चंदन की लकड़ी मिली

में चंदन तस्करी का काम काफी समय से चल रहा है। जिसको लेकर वन विभाग की टीम अलर्ट मोड पर थी और सप्लाई का इंतजार कर रही थी। बुधवार शाम को चंदन की इस सप्लाई को आते ही वन विभाग ने पकड़ लिया और एक तस्करी को भी पकड़ा है।

डीएफओ गौरव गर्ग ने बताया कि बुधवार को वन विभाग की टीम रात को गश्त पर निकली हुई थी। उन्हें सूचना मिली कि सफिट हाउस के पास एक कार्गो ट्रक में चंदन तस्करी चंदन लेकर जा रहे हैं। इस पर टीम ने उस ट्रक को पकड़ लिया। ट्रक की जांच करने पर उसमें रखे 5 बोरों में चंदन



वन विभाग ने कार्रवाई कर चंदन की लकड़ी सहित एक जने को गिरफ्तार किया।

की लकड़ी मिली। जिसके बाद टीम ट्रक को वन कार्यालय लेकर आई है। साथ टीम ने अली नगर निवासी इकबाल खां पुत्र ईशक खां को

गिरफ्तार किया है। अभी तक की पूछताछ में सामने आया है इकबाल के पास चंदन की लकड़ियों चंदेरिया से आई थीं उसे

इन्हें जयपुर सप्लाई करवाना था। वन विभाग की टीम द्वारा अब इस नेटवर्क से जुड़े लोगों के बारे में पूछताछ की जा रही है।

## कानासर में कुरजां ने दी दस्तक

बाप, (निर्स)। साइबेरिया, मंगोलिया से हजारों किलोमीटर का सफर तय कर कुरजां प्रतिवर्ष बाप उपखंड क्षेत्र के कई गाँवों के तालाबों पर डेर डालते हैं। पिछले कुछ सालों से कानासर को कुरजां पक्षियों ने शीतप्रवास का ठिकाना बना रखा है। इस दौरान बड़ी तादाद में कुरजां यहाँ रहती हैं। इस वर्ष प्रवासी कुरजां पक्षियों का पहला जलथा कानासर में दस्तक दे चुका है। पक्षी प्रेमी शिक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि मेहमान परिंदों के बड़े बड़े समूह पड़ाव स्थल पर उड़ान भरते नजर आ रहे हैं। नेवा -कानासर के खेतों में भी कुरजां झुंड में दिखाई दे रही है। कानासर के अलावा कुरजां जान्वा, बाप, शेखासर, मालमसिंह की सिड्डू में सुरक्षित स्थल तालाबों पर कुरजां पड़ाव डालती हैं।

शिक्षक पर्यावरण प्रेमी ओमप्रकाश कानासर ने बताया कि पक्षियों के लिए ईंसानों की ओर से बनाई सरहद मायने नहीं रखती है। परिंदे उड़ान भरते हैं तो वो अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। दुनियाँ में जहाँ मान सम्मान व सुरक्षा मिले वहाँ बिना जीपीएस पहुंचते हैं और शान्ति का संदेश देते हैं। खास बात यह है कि ये पक्षी पहुंचने में न तो अपनी राह भटकते हैं न ही इनका समय गड़बड़ता है। कुदरत ने इन्हें विशेष क्षमता प्रदान की है। कुरजां एक खूबसूरत पक्षी है जो सूर्योदय में साबेरिया से मंगोलिया तक फैले प्रदेश से हिमालय की ऊँचाइयों को पार करता हुए भारत पहुंचता है।



### राशिफल

शुक्रवार 20 अक्टूबर, 2023

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, छठी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत् 2080, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 9:04 तक, सोमवार योग प्रातः 6:54 तक, बर वरण दिन 12:52 तक, चन्द्रमा आश्विन रात्रि 9:04 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरु-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में। रात्रियोग रात्रि 9:04 से आरम्भ होगा। आज उपांग ललिता व्रत, ललिता पंचमी, नत पंचमी है। श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:57 तक, चर 10:47 से 12:12 तक, लाभ-अमृत 12:12 से 3:02 तक, शुभ 4:27 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:32, सूर्यास्त 5:52

**मेष**  
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

**तुला**  
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृष**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित खोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता भी यथावत बनी रहेगी।

**वृश्चिक**  
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**धनु**  
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिवस अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

**कर्क**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशवासन प्राप्त होगा। अटकें हूए कार्य बने लेंगे। धार्मिक स्थान को यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

**मकर**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**सिंह**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

**कुंभ**  
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बने लेंगे। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

**कन्या**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**  
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।